

बेफिकर २

१

सदा अपने को बाप के दिलतख्त-नशीन आत्मायें अनुभव करते हो ? ऐसा तख्त सारे कल्प में अब एक बार ही मिलता है और कोई समय नहीं मिलता । जो श्रेष्ठ बात हो और मिले भी एक ही बार—तो उस तख्त को कभी भी छोड़ना नहीं चाहिए । जो बाप के दिल तख्त-नशीन होंगे, सदा होंगे—तो तख्त-नशीन की निशानी क्या है ? तख्त पर बैठने से क्या होता है ? तख्त पर बैठने से अपने को बेफिक्र बादशाह अनुभव करेंगे । तो सदा बेफिक्र रहते हो या कभी थोड़ा-थोड़ा फिक्र आ जाता है—चाहे अपना, चाहे सेवा का, चाहे दूसरों का ? तो सदा दिलतख्त पर बैठने वाली आत्मा नशे में भी रहती और नशा रहने के कारण स्वतः ही बेफिक्र रहती । क्योंकि इस तख्त में यह विशेषता है कि जब तक जो तख्त-नशीन होगा वह सब बातों में बेफिक्र होगा । जैसे आजकल भी कोई- कोई स्थान को

विशेष कोई न कोई नवीनता, विशेषता मिली हुई है। तो दिलतख्त की यह विशेषता है—फिक्र आ नहीं सकता। तो नीचे क्यों आते जो फिक्र हो ? काम करने के लिए नीचे आना पड़ता है! दिलतख्त को यह भी वरदान मिला हुआ है कि कोई भी कार्य करते भी दिलतख्त-नशीन बन सकते। फिर सदा क्यों नहीं रहते ?

२

बच्चों को कभी भी बाप का वर्सा भूलता है क्या! तो यह दिलतख्त भी बाप का वर्सा है, तो वर्सा तो सदा साथ रहेगा ना! क्या याद रखेंगे ? कौन हो ? बेफिक्र बादशाह। बारबार स्मृति को इमर्ज करते रहना। सदा यह नशा रहे कि हम साधारण आत्मा नहीं हैं लेकिन विशेष आत्मायें हैं। आप जैसी विशेष आत्मायें सारे विश्व में बहुत थोड़ी हैं। थोड़ों में आप हो—इसी खुशी में सदा रहो।

३

स्वमान सर्व इच्छाओं को सहज ही सम्पन्न कर देता है। तो जब बाप सदा के लिए स्वमान देता है, तो कभी-कभी क्यों लेवें! स्वमानधारी सदा बेफिक्र बादशाह होता है, सर्व प्राप्ति-स्वरूप होता

है। उसे अप्राप्ति की अविद्या होती है। तो सदा स्वमानधारी आत्मा हूँ—यह याद रखो। स्वमानधारी सदा बाप के दिलतख्त-नशीन होता है क्योंकि बेफिक्र बादशाह है! बादशाह का जीवन कितना श्रेष्ठ है! दुनिया वालों के जीवन में कितनी फिक्र रहती हैं—उठेंगे तो भी फिक्र, सोयेंगे तो भी फिक्र। और आप सदा बेफिक्र हो।

४

कभी किसी भी परिस्थिति में खुशी गायब तो नहीं तो नहीं होती। क्योंकि बाप द्वारा खुशी का खजाना रोज मिलता रहता है, तो जो चीज रोज मिलती है वह बढ़ेगी ना। कभी भी खुशी कम हो नहीं हो सकती। क्योंकि खुशियों के सागर द्वारा मिलता ही रहता है। अखुट है। कभी भी किसी बात के फिकर में रहने वाले नहीं। प्रापर्टी का क्या होगा, परिवार का क्या होगा। परिवर्तन ही होगा ना। पुरानी दुनिया में कितना भी श्रेष्ठ हो लेकिन पुराना ही है। इस लिए बेफिकर बन गये। पता नहीं आज है कल रहेंगे, नहीं रहेंगे- यह भी फिकर नहीं। जो होगा अच्छा होगा। ब्राह्मणों के लिए सब अच्छा है। बुरा कुछ नहीं। आप तो पहले ही बादशाह हो। अभी भी बाद-शाह भविष्य में भी बादशाह। जब सदा के बादशाह बन गये तो बेफिकर हो गये।

ऐसी बादशाही जो कोई छीन नहीं सकता। कोई बन्दूक से बादशाही उड़ा नहीं सकता। यही खुशी सदा रहे और औरों को भी देते जाओ। औरों को भी बेफिकर बादशाह बनाओ। अच्छा!

५

अपने को कल्प-कल्प की अधिकारी आत्मा अनुभव करते हो? अनेक बार यह अधिकार प्राप्त किया है और आगे के लिये भी निश्चित है कि कल्प-कल्प करते ही रहेंगे। यह पक्का निश्चय है ना। क्योंकि निश्चय है इस ब्राह्मण जीवन का फ़ाउन्डेशन। अगर निश्चय का फ़ाउन्डेशन पक्का है तो कभी भी हिलेंगे नहीं। चाहे कितने भी तूफ़ान आ जाये, चाहे कितने भी भूकम्प हो जायें लेकिन हिलेंगे नहीं। क्योंकि फ़ाउन्डेशन पक्का है। अभी भी देखो, प्रकृति का भूकम्प आता है तो कौन सी बिल्डिंग गिरती है? जो कच्ची होती है। पक्के फ़ाउन्डेशन वाली नहीं गिरेगी। तो आपका फ़ाउन्डेशन कितना पक्का है? हिलने वाला है क्या? निश्चयबुद्धि विजयी—सदा यह स्मृति में रहे। निश्चय भी है और विजय भी है। ये नशा हो कि हमारी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी। विजय है और सदा होगी। तो अटल निश्चय हो। टलने वाला नहीं हो, थोड़ी सी बात हुई और

निश्चय अटल नहीं रहे, ऐसा निश्चय नहीं हो। अटल निश्चय तो अटल विजय होगी। विजय की भावी टल नहीं सकती। अटल है। तो ऐसे निश्चयबुद्धि सदा हर्षित रहेंगे, निश्चित रहेंगे। क्योंकि चिन्ता खुशी को खत्म करती है। और निश्चिन्त हैं तो खुशी सदा रहेगी। नहीं तो थोड़ी बात भी होगी तो चिन्ता होगी कि ये क्या हुआ, ये ऐसा हुआ। इस क्यों क्या से भी निश्चिन्त। क्या, क्यों, कैसे—ये चिन्ता की लहर है। अभी बड़ी चिन्ता नहीं होगी, इस रूप में होगी। होना नहीं चाहिये था, हो गया, ऐसा, वैसा, क्यों, क्या, कैसा, ये शब्द बदल जाते हैं। तो ऐसा है कि कभी-कभी क्वेश्चन मार्क होता है? कई कहते हैं ना कि मेरे पास ही ये क्यों होता है? मेरे से ही क्यों होता है? मेरे पीछे ये बंधन क्यों है, मेरे पीछे माया क्यों आती है, मेरा ही हिसाब किताब कड़ा है क्यों? तो 'क्यों' आना माना चिन्ता की लहर है। तो इस चिन्ताओं से भी परे—इसको कहा जाता है निश्चिन्त। तो कौन हो? निश्चिन्त हो या थोड़ी-थोड़ी क्यों, क्या है? निश्चिन्त आत्मा का सदा सलोगन है अच्छा हुआ, अच्छा है और अच्छा ही होना है। बुराई में भी अच्छाई अनुभव करेंगे। बुराई से भी अपना पाठ पढ़ लेंगे। बुराई को बुराई के रूप में नहीं देखेंगे।

इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त। 'चिन्ता' शब्द से भी अविद्या हो। जैसे गायन है ना इच्छा मात्रम अविद्या। ऐसे चिन्ता की भी अविद्या हो। चिन्ता क्या होती है—यह अनुभव नहीं हो। तो ऐसी अवस्था इसको कहा जाता है निश्चिन्त। कोई भी बात आये तो 'क्या होगा' नहीं आयेगा, फ़ौरन ही यह आयेगा 'अच्छा होगा', बीत गया अच्छा हुआ। जहाँ अच्छा है वहाँ सदा बेफ़िक्र बादशाह हैं। तो निश्चयबुद्धि का अर्थ है बेफ़िक्र बादशाह। तो ऐसे है या थोड़ा-थोड़ा फ़िक्र कभी आ जाता है? तो बेफ़िक्र बादशाह ही बाप समान है। बाप को फ़िक्र है क्या? इतना बड़ा परिवार होते भी फ़िक्र है क्या? सब कुछ जानते हुए, देखते हुए बेफ़िक्र। ऐसे बेफ़िक्र हो? मातायें बेफ़िक्र हो या प्रवृत्ति में जाकर थोड़ा फ़िक्र हो जाता है? वायुमण्डल में जाकर थोड़ा प्रभाव पड़ जाता है? वायुमण्डल का प्रभाव नहीं पड़ता? अपना प्रभाव वायुमण्डल पर डालो, वायुमण्डल का प्रभाव आपके ऊपर नहीं पड़े। क्योंकि वायुमण्डल रचना है, आप मास्टर रचता हो। वायुमण्डल बनाने वाला कौन? मनुष्यात्मा। तो रचता हो गया ना। तो रचता के ऊपर रचना का प्रभाव नहीं हो, लेकिन रचता का रचना के ऊपर प्रभाव हो। तो कोई भी बात आये तो यह याद

करो कि मैं विजयी आत्मा हूँ। आगे चलकर अति होना है या कम होना है? तो अति का आह्वान कर रहे हो या घबराते हो? घबराने की कोई बात नहीं। अगर शरीर जायेगा तो भी गैरेन्टी है और रहेगा तो सेवा करनी है। दोनों में अच्छा है। तीन पैर पृथ्वी तो मिलनी है। बेफ़िक्र हो ना। नालेज है ना इसलिये बेफ़िक्र हैं। सारी सभा बेफ़िक्र बादशाहों की बैठी है ना। जाने वाले कहाँ भी होंगे तो जायेंगे, चाहे भूकम्प में जायें, चाहे किस स्थिति में भी जायें, अच्छे-अच्छे चलते चलते भी चले जायेंगे। जाने वाले को कोई रोक नहीं सकता। जाने वाले चले गये लेकिन फ़िक्र आपको देकर क्यों जाये? फ़िक्र भी साथ में लेकर चले जाये ना। ज्ञान की शक्ति है ना। अच्छा। होने वाला होना ही है। आप सभी तो बेफ़िक्र बादशाह हो।

६

“आज बापदादा बेफिकर बादशाहों की सभा देख रहे हैं। यह राज्य सभा सारे कल्प में विचित्र सभा है। बादशाह तो बहुत हुए हैं लेकिन बेफिकर बादशाह यह विचित्र सभा इस संगमयुग पर ही होती है। यह बेफिकर बादशाहों की सभा सतयुग की राज्य सभा से भी श्रेष्ठ है। क्योंकि वहाँ तो फिकर और फखुर दोनों के अन्तर का

ज्ञान इमर्ज नहीं रहता है। फिकर शब्द का मालूम नहीं होता। लेकिन अभी जबकि सारी दुनिया कोई न कोई फिकर में है सवेरे से उठते अपना, परिवार का, कार्यव्यवहार का, मित्र सम्बन्धियों का कोई न कोई फिकर होगा लेकिन आप सभी अमृतवेले से बेफिकर बादशाह बन दिन आरम्भ करते और बेफिकर बादशाह बन हर कार्य करते। बेफिकर बादशाह बन आराम की नींद करते। सुख की नींद, शान्ति की नींद करते हो। ऐसे बेफिकर बादशाह बन गये। ऐसे बने हो या कोई फिकर है? बाप के ऊपर जिम्मेवारी दे दी तो बेफिकर हो गये। अपने ऊपर जिम्मेवारी समझने से फिकर होता है। जिम्मेवारी बाप की है और मैं निमित्त सेवाधारी हूँ। मैं निमित्त कर्मयोगी हूँ। करावनहार बाप है, निमित्त करनहार मैं हूँ। अगर यह स्मृति हर समय स्वतः ही रहती है तो सदा ही बेफिकर बादशाह है। अगर गलती से भी किसी भी व्यर्थ भाव का अपने ऊपर बोझ उठा लेते हो तो ताज के बजाए फिकर के अनेक टोकरे सिर पर आ जाते हैं। नहीं तो सदा लाइट के ताजधारी बेफिकर बादशाह हो। बस बाप और मैं तीसरा न कोई। यह अनुभूति सहज बेफिकर बादशाह बना देती है। तो ताजधारी हो या टोकरेधारी हो? टोकरा उठाना और

ताज पहनना कितना फर्क हो गया। एक ताजधारी सामने खड़ा करो और एक बोझ वाला, टोकरे वाला खड़ा करो तो क्या पसन्द आयेगा! ताज या टोकरा? अनेक जन्मों के अनेक बोझ के टोकरे तो बाप आकर उतार कर हल्का बना देता। तो बेफिकर बादशाह अर्थात् सदा डबल लाइट रहने वाले जब तक बादशाह नहीं बने हैं तब तक यह कर्मेन्द्रियाँ भी अपने वश में नहीं रह सकती हैं। राजा बनते हो तब ही मायाजीत, कर्मेन्द्रियजीत, प्रकृति जीत बनते हो। तो राज्य सभा में बैठे हो ना!